बैगा जनजाति की सामाजिक–आर्थिक स्थिति का अध्ययन (बालाघाट जिले के बैहर तहसील के संदर्भ में)

* राम कुमार उसरेठे

जनजातीय जीवन का आधार प्रकृति है । आदिम काल से आधुनिक काल तक यदि जनजातियों के जीवन पर दृष्टि डाले तो स्पष्ट होता है कि अन्य समाज से इनकी जीवन शैली मैं अंतर रहा है। आधुनिक युग के वैभव से दूर अपनी एक अलग संस्कृति संजोए हुए है। प्रकृति की शांत गोद मैं रहनें वाले ये जनजातीय समुह अपनी परंपराओं मूल्यों एवं नियमों से बंधे हुए हैं।

मध्य प्रदेश मैं देश की सर्वाधिक जनजातियां एवं सर्वाधिक जनजाति जनसंख्या निवास करती है। मध्य प्रदेश की कुल जनसंख्या का 20.3 प्रतिशत भाग जनजातीय जनसंख्या का है। मध्य प्रदेश की प्रमुख जनजातियों मैं गोड,भील,कोल,कोरबा,सहरिया,बैगा,भारियां,कमार,कोरकू एवं प्रधान आदि है।

बैगा मध्य प्रदेश की प्रमुख जनजाति है यह मध्य प्रदेश के डिंडोरी,मंडला एवं बालाघाट जिलो मैं निवास करती है। बालाघाट जिले की बैहर तहसील मैं बैगा जनजाति की प्रमुख बसावट है। बैहर तहसील का कुल क्षैत्रफल 1555.62 वर्ग किलोमीटर है इसकी जनसंख्या 2001 की जनगणाना के अनुसार 337182 है जिसमैं से 181101 जनसंख्या अनुसूचित जनजाति की है बालाघाटा जिले की अधिकांश आदिवासी जनसंख्या इसी क्षेत्र मैं निवास करती है। बैहर तहसील के अंतर्गत बालाघाट जिले के तीन आदिवासी विकासखंड बैहर, बिरसा एवं परसबाडा शामिल हैं। संपूर्ण बैहर तहसील क्षेत्र भारत शासन द्वारा अनुसूचित क्षेत्र घोषित किया गाया है। बैहर कि बैगा जनजाति को भारत शासन द्वारा विशेष पिछडी जनजाति घोषित की गई है एवं इसके विकास के लिए बैहर मैं बैगा विकास अभिकरण की स्थापना की गई है। बैहर का संपूर्ण क्षेत्र वनों से ढका हुआ पहाड़ी–पठारी भाग है ।

दक्षिण बैहर का अधिकांश भाग जहॉ बैगा जनजाति की 50 प्रतिशत जनसंख्या का एकत्रिकरण है वही भाग नक्सली गतिविधियों का केन्द्र बना हुआ है। बैगा जनजाति की पिछडी हुई दशा को देखते हुए इनके सामाजिक एवं आर्थिक विकास की वर्तमान दशा का अध्ययन कर विकास हेतु उपयुक्त सुझावो को प्रस्तुत करने हेतु शोध कार्य किया गया है

अध्ययन क्षेत्रः– प्रस्तुत शोध का अध्ययन क्षेत्र बालाघाट जिले की बैहर तहसील है ।

उद्देश्य :–

1. बैगा जनजाति की वर्तमान सामाजिक आर्थिक दशा का अध्ययन करना ।
2. तथ्यों के आधार पर बैगा जनजाति की सामाजिक आर्थिक दशा के निष्कर्षो एवं उपायों को प्रस्तुत करना।

शोध विधिः–

शोध संरचना–प्रस्तुत शोध हेतु अन्वेषणात्मक शोध प्ररचना के अंतर्गत अध्ययन किया गया ।

अध्ययन का समग्र– बालाघाट जिले की बैहर तहसील के समस्त बैगा जनजाति परिवार ।

अध्ययन की ईकाई –बैगा जनजाति परिवार ।

निदर्शन विधि–बालाघाट जिले की बैहर तहसील के जनजातीय बहुल तीन ग्रमों का उद्देश्य पूर्ण निदर्शन द्वारा चयन करते हुए दैव निदर्शन विधि से प्रत्येक गॉव से 20 बैगा जनजाति परिवारो का चयन करते हुए कुल 60 बैगा जनजाति परिवारो को अध्ययन हेतु चुना गया ।

आंकडो के स्त्रोत – प्रस्तुत अध्ययन हेतु प्राथमिक आंकडो के संकलन हेतु चयनित इकाइयों से साक्षात्कार अनुसूची के माध्यम से आंकडे एकत्र किये गयें। द्वितीयक आंकडो का संकलन बैगा विकास अभिकरण के प्रतिवेदन, जिला गजेटियर पुस्तको एवं शोध पत्र आदि से किया गया है।

विश्लेषण सांराश :–

- अध्ययन किये गये कुल 60 बैगा परिवारो मैं से 30 प्रतिशत बैगा परिवार का आवास झोपडी एवं 70 प्रतिशत का कच्चा मकान है।
- पेय जल के साधन मैं 26.67 प्रतशित परिवार हेंडपंप से , 50 प्रतिशत कुंए से , 23.33 प्रतिशत नदी से पेयजल लेते है।
- 75 प्रतिशत एकाकी परिवार एवं 25 प्रतिशत संयुक्त परिवार है।
- 30 प्रतिशत उत्तरदाता अविवाहित , 65 प्रतिशत विवाहित एवं 5 प्रतिशत उत्तरदाता विधावा / विदुर है।
- कुल 42 विवाहित उत्तरदाता मैं से 19.05 प्रतिशत का विवाह 10 – 15 वर्ष , 48.62 प्रतिशत उत्तरदाता का विवाह 16 – 20 वर्ष एवं 33.33 प्रतिशत उत्तरदाता का विवाह 21 – 25 वर्ष की आयु मैं हुआ ।
- बैगा बहिर्गौत्रीय विवाह को मान्यता देते है, बैगाओं के विवाह के प्रमुख प्रकार मैं चढ विवाह , लमसेना विवाह , उठवा विवाह , चोर विवाह , पैठूल विवाह, खडौनी विवाह, छोटकी रखना आदि है , वर्तमान मैं चढ विवाह प्रचलन मैं है।
- बैगाओं की सामाजिक अंतः किया के दौरान व्यवहार करते

शोधार्थी, समाजशास्त्र विभाग, शासकीय कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय इन्दौर (म.प्र.)

समय परिहास संबंध एवं परिहार संबंध को ध्यान मैं रखा जाता है।

- बैगा गोदना त्रिय जनजाति है इनमें गोदना का श्रंगारिक के साथ– साथ सामाजिक एवं सांस्कृतिक महत्व भी है।
- 90 प्रतिशत उत्तरदाता जादू मैं विश्वास करते है इनमैं आज भी अंधविश्वास व्याप्त है।
- बैगाओं का धर्म जीववादी है, ये आज भी आत्मा पर विश्वास करते है।
- विवाहो के अनेक पारंपरिक नृत्य है जिनमैं करमा , सेला , बिलवा , परधौनी , फाग , झरपट , गेंडी आदि प्रमुख हैं । ये नृत्य आज भी अपने परंपरागत स्वरूप मैं किये जाते हैं।
- 36.67 प्रतिशत उत्तरदाता भूमिहीन है एवं 63.33 प्रतिशत के पास कृषि भूमि हैं।
- 60 प्रतिशत उत्तरदाता मजदुरी करते है। एवं 40 प्रतिशत अन्य कार्यो मैं लगे हुए हैं।
- मजदुरी करने वाले कुल 36 उत्तरदाताओं मैं से 25 प्रतिशत कृषि मजदुरी , 16.67 प्रतिशत वनों मैं मजदूरी, 11.11 प्रतिशत घरेलु मजदूरी , 22.22 प्रतिशत व्यवसायों मैं एवं 25 प्रतिशत सरकारी कार्यो मैं मजदूरी करते है।
- 100 प्रतिशत उत्तरदाता वनोपज संग्रह करते है, 35 प्रतिशत उत्तरदाता शराब का निर्माण करते है ।
- 37.33 प्रतिशत उत्तरदाता जंगली पशुओं का शिकार करते है ये मुख्य रूप से खरगोश एवं जंगली सुअर का शिकार करते है। 66.67 प्रतिशत उत्तरदाता ने शिकार पर प्रतिबंध ा लगने के कारण शिकार करना बंद कर दिया है ।
- 60 प्रतिशत उत्तरदाता हस्तकला की वस्तुए बनाते है एवं हस्तकला की वस्तु बनाने वाले 36 परिवारो मैं से 55.56 प्रतिशत बांस से चटाई, टोकरी व ढलीया बनाते है। 16.67 प्रतिशत बांस के खिलोने, 19.44 प्रतिशत बांस के फर्नीचर एवं 8.33 प्रतिशत लकडी के फर्नीचर बनाते है।
- 42.67 प्रतिशत उत्तरदाता ऋणग्रस्त है, ऋणग्रस्त कुल 25 उत्तरदाताओं मैं 16 प्रतिशत पर 2000 रू. तक , 24 प्रतिशत पर 3000 – 4000 रू. तक , 20 प्रतिशत पर 4000 – 5000 रू. तक एवं 40 प्रतिशत पर 5000–6000 रू. तक ऋण है।
- ऋणग्रस्त कुल 25 उत्तरदाताओं मैं से 40 प्रतिशत ने कृषि कार्य हेतु , 20 प्रतिशत पशुपालन हेतु , 16 प्रतिशत बीमारी के उपचार हेतु , 16 प्रतिशत ने विवाह हेतु , 8 प्रतिशत उत्तरदाता ने सामान्य आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु ऋण लिया है।
- 61.67 उत्तरदाता अशिक्षित एवं 38.33 प्रतिशत उत्तरदाता शिक्षित है।
- कुल 23 शिक्षित उत्तरदाता मैं से 60.87 प्रतिशत प्राथमिक , 34.78 प्रतिशत माध्यमिक , 4.35 प्रतिशत हाईस्कुल स्तर की शिक्षा प्राप्त किये हुए है।

सुझाव :–

- बैहर के बैगा बहुल क्षेत्र मैं विशेष जागरूकता केन्द्र स्थापित कर बैगाओं को आधुनिक समाज से सामंजस्य स्थापित करने योग्य बनाया जाना चाहिए।
- बैगा बच्चों की बीच मैं शाला त्यागने की प्रवृत्ति को कम किया जाना चाहिये।
- बैगा बहुल ग्रमो मैं बिजली पहुँचाई जानी चाहिए।
- बैहर के परिक्षेत्र मैं पहाडो के ढलानों मैं स्टापडेम बनाकर कृषि सिंचाई के लिए जल उपलब्ध करना चाहिए।
- खाली पडे भू खंडो पर फलदार वृक्ष बागवानी को प्रोत्साहन दिया जाना चाहिये।
- बैगा को रेशम किट पालने हेतु प्रशिक्षित कर इस हेतु साधन उपलब्ध कराये जाने चाहिये ।
- बैगा की परंपरागत हस्तकला को प्रशिक्षण द्वार उन्नत किया जाना चाहिये।
- बैगा ग्रामों मैं पेय जल एवं चिकित्सा की समुचित व्यवस्था की जानी चाहिये।

संदर्भ ग्रंथ सूची :–

एलविन बेरियर (1986) " द बैगाज " ज्ञान प्रकाशन , दिल्ली
त्रिपाठी , रमैंशचन्द्र (1985) " बैगा जनजाति एक सामाजिक अध्ययन " आदिम जाति अनुसंधान विकास संस्थान भोपाल
निरगुणे , बसंत (1986) " बैगा " आदिमजाति अनुसंधान विकास संस्थान भोपाल
तिवारी, डॉ शिवकुमार (1982) " मध्य प्रदेश के आदिवासी " मध्य प्रदेश हिन्दी ग्रथअकादमी भोपाल
दुबे , डॉ. श्यामाचरण (1982) " मानव और संस्कृति " राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली
शर्मा ब्रम्हादेव (1986) " आदिवासी विकास एक सैद्धांतिक विवेचना " मध्य प्रदेश हिन्दी ग्रंथ अकादीमी भोपाल
मुखर्जी , रविन्द्र नाथ (2001) " सामाजिक शोध व सांख्यिकी " विवेक प्रकाशन दिल्ली
हसनैन , नदीम (1986) " जनजातीय भारत " जवाहर पब्लिशर्स एवं डिस्ट्रीब्यूटर्स दिल्ली
शर्मा , डॉ. श्रीनाथ (2006) " जनजातीय समाजशास्त्र " म.प्र.हिन्दी ग्रंथ अकादमी भोपाल
दुबे, रश्मि (जुलाई 1991) " बैगा जनजाति मैं धर्म का परिर्वतीत स्वरूप " वन्यजाति पत्रिका दिल्ली